शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

विज्ञान युग में असहनीय है राजनीति

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

आज पूरी दुनिया अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है। विज्ञान के आविष्कारों ने जीवन के सभी क्षेत्रों में विकास को तीव्र गति प्रदान की। उसी विज्ञान के कारण पहिये थम गए हैं। कोविड-19 नामक सूक्ष्म विषाणु ने करोड़ों लोगों को प्रभावित किया है। कोरोना महामारी से छुटकारा पाने के लिए वैज्ञानिक दिन-रात वैक्सीन बनाने में जुटे हुए हैं। कभी खबर आती है कि वैक्सीन बन गया है और उसे पीड़ितों को लगाया जा रहा है, लेकिन कुछ ही समय बाद समाचार आता है कि वैक्सीन जल्दी आने की उम्मीद नहीं है। महामारी से क्या विकसितए क्या विकासशील और क्या अविकसित सभी राष्ट्र सभी एक पंक्ति में आकर खड़े हो गए हैं। विगत वर्षों में अर्थव्यवस्था जिस ढंग से कुलांचे भर रही थी और यह अहसास दिलाया जा रहा था कि बस धरती पर स्वर्ग का राज्य आने ही वाला है कि तभी इस महामारी ने सारे सुनहरे सपनों को ध्वस्त कर दिया। उपभोक्ता वस्तुओं की खपत में कमी का परिणाम उद्योग धंधों पर दिखायी दे रहा है। उत्पादन का चक्र टूट जाने से बेरोजगारी चरम पर है। आर्थिक तनाव बढ़ने से व्यक्ति आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है। पूंजीवाद और विज्ञान ने लोगों के दुःखों को कम करने का आश्वासन दिया था। वह मात्र छलावा साबित हो रहा है। इसके बावजूद विकास की तथाकथित अवधारणा पर विश्वास अभी तक कायम है। अज्ञेय ने कहा है कि 'दुःख मांजने का काम करता है', परंतु यहां तो दुःखों से लाभ उठाने की तिकड़में की जा रही हैं। कोरोना महामारी में चिकित्सकीय पेशे पर जिस प्रकार से प्रश्नचिह्न लगे हैं, वह पेशे की पवित्रता को नष्ट करते हैं। इन सबमें शासन-प्रशासन की समान रूप से भागीदारी रही है। महामारी ने विकास के बड़े-बड़े दावों की पोल खोल दी है। इसके बाद दुनिया के राष्ट्राध्यक्ष और राष्ट्र प्रमुख एक-दूसरे को नीचा दिखाने, देशों की भूमि हड़पने, लोकतंत्र स्थगित करने, सत्ता बचाने-बनाने के खेल में आकंठ डूबे हुए हैं। कोरोना महामारी में दुनिया के लोकतांत्रिक देशों में तानाशाही की पदचाप को सुना जा सकता है। महामारी ने विकराल रूप इसलिए धारण किया क्योंकि वैज्ञानिक तरीकों के स्थान पर इसे राजनीतिक तरीके से हल करने के प्रयास किए गए। राजनेताओं का अहंकार दुनिया में उथल-पुथल के लिए जिम्मेदार है। पूरी महामारी में वैज्ञानिकों की ओर से कभी कोई दावा पेश नहीं किया गया, परंतु स्थानीय और वैश्विक राजनेता प्रतिदिन ऐसे बयान देते रहे, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। अपने आप को देश और दुनिया का रक्षक बताने वाला नेतृत्व कोरोना महामारी में बिलकुल निकम्मा साबित हुआ है। यदि और अधिक समय तक दुनिया इन 'अज्ञानियों' के हाथों में रही तो उसका विनाश निश्चित है। नेताओं ने महामारी में स्थानीय और वैश्विक स्तर पर समाज को नस्ल, वर्ण, धर्म, जाति, संप्रदाय, पक्ष, प्रांत आदि में विभाजित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इसलिए दुनिया की व्यवस्था की कमान वैज्ञानिकों को अपने हाथों में लेना चाहिए। विज्ञान युग में राजनीति से मसले हल होने के बजाए और अधिक उलझेंगे।